आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ -------- Date:02-09-14

सत्य स्वरूप, ज्ञान सागर, परमात्मा, अपने ज्ञान से, हमारे जैसे साधारण मनुष्य को देवता बनाने वाले बाप के कहा, मीठे बच्चे - ब्राह्मण हैं चोटी और शूद्र हैं पाव, जब शूद्र से ब्राह्मण बने तब देवता बन सकेंगे.

जब से बेहद के बाप ने इस बेहद के ज्ञान रुद्र यज्ञ कि स्थापना कि है तब से अज्ञानी मनुष्यों इस का विरोध मुख्य दो बातों के लिए ही करते हैं - एक है पवित्रता और दूसरा है विनाश. अब धीरे - धीरे पवित्रता को तो लोग मान ने लगे हैं कि यह अच्छी बात है लेकिन सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सही ज्ञान न होने के कारण, आज भी कई लोग कहते है कि ब्रहमाकुमारीयॉ तो विनाश कि बाते ही करती रहती है.

लेकिन हम बाबा के बच्चे जानते हैं कि विनाश तो, न भगवान करवाता हैं, न कोई मनुष्य करवाता हैं, बल्कि विनाश तो अपने समय पर अपने आप ही होना ही हैं, क्योंकि यह सृष्टि का चक्र तो अनादि काल से फिरता ही रहता है. ज्ञान सागर बाप तो अपने समय पर आकर हमें ज्ञान देकर मनुष्य से देवता बनने का रास्ता बतलाते है क्योंकि वही एक है जिसे इस बेहद कि सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान है. इस लिए वही सच्चा गीता-ज्ञान दांता इस समय हम भाग्यशाली बच्चों को ऐडप्ट करता है और शूद्र से ब्राह्मण बनाता है. फिर ज्ञान और योग सिखलाकर हमारी आत्मा को संपूर्ण निर्विकारी और सर्वगुण संपन्न बनाते है जिसे कि हमारी आत्मा आनेवाले सतयुग के लिए लायक बने.

हम ब्राह्मणों को सतयुग के देवी-देवताओं से भी श्रेष्ठ माना गया है इसके मुख्य कारण क्या है?

1. हम ब्राह्मणों को ही परमात्मा का साथ है, सतयुग में देवी-देवताओं को परमात्मा के बारे में कोई ज्ञान नहीं होता.

2. हम भाग्यशाली ब्राह्मणों की स्वयं परमात्मा, इस समय बाप बनकर पालना करते है, टीचर बनकर पढ़ाते है और फिर सतगुरु बनकर हमें सच्ची सद्गति देते है. सतयुगी देवताओं के तो उनके लौकिक के पिता और टीचर अलग-अलग होंगे, वहाँ सतयुग में गुरु होता नहीं.

3. ब्राह्मणों को इस समय आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है, जब कि देवताओं को स्वयं आत्मा है उतना ही ज्ञान होता है.

4. अभी हम ब्राह्मण पुरुषार्थ कर, माया-रावण से युद्ध कर, अपनी आत्मा को बाबा के साथ योग से संपूर्ण पावन बनाते है और बाबा का दिया हुआ ज्ञान धारण कर सर्वगुण संपन्न बनते है. इसलिए अब हम ब्राह्मणों कि है चढ़ती कला. जबकि सतयुग के देवी-देवताये तो अभी के पुरुषार्थ का प्रालब्ध भोगते है. वह कोई पुरुषार्थ नहीं करते. इसलिए धीरे-धीरे उनकी आत्मा भी जन्म-बाय-जन्म गिरती ही आती है.

ऐसा हमारा ब्राह्मण जीवन, हमारे पूरे कल्प के बाकी ८३ जन्मो में से सबसे श्रेष्ठ है. तो यही नशा रहे कि हम ब्राह्मण है चोटी, बाद में है देवता, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र. इस नशे में रहकर सदा हमारा पुरुषार्थ तीव्र रखेंगे तो हम सफलता कि सर्वोच्च शिखर पर जल्दी ही पहुँच जायेंगे. ॐ शांति.